परिव्राजकाचार्य महर्षि १०८
स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज

* ॐ *

बालोपयोगी

नीति-पुष्पाञ्जलिः

———*———

लेखक :-
श्रीयुत मास्टर कृष्णप्रसाद जी, मुख्याधिष्ठाता,
आर्य कन्या विद्यालय, भोपाल.

———*———

प्रकाशक :-
श्रीमती महादेवी जी 'वानप्रस्थिनी' मुख्याध्यापिका,
आर्य कन्या विद्यालय, भोपाल.

———*———

मुद्रक :-
गिरधारीलाल नन्हेंलाल, मेनेजर, सरस्वती
विलास प्रेस, नरसिंहपुर.

———*———

प्रथमावृत्ति १०००. सितंबर १९३९. मूल्य =)॥.

महादेवी जी 'वानप्रस्थिनी' मुख्याध्यापिका,
कन्याविद्यालय, भोपाल.

विषय-सूची ।

॥ ॐ ॥

"प्रकाशिका का नम्र निवेदन"

पाठक वृन्द ! आपने प्रायः धर्म्म व नीति सम्बन्धी अनेक छन्द पढ़े होंगे, पर इस छोटी सी पुस्तक में धर्म्म व नीति के जिन वचनों को पद्य-रचना द्वारा उपस्थित किया गया है उस में यह अनूठा यत्न है कि हिन्दी वर्णमाला के वर्ण-क्रमानुसार दोहे, सोरठे और चौपाई आदि छन्द रचे गए हैं। पद्यों के पढ़ने से विदित होगा कि उन में कर्त्तव्य, धर्म्म व नीति की बड़ी ही उपादेय शिक्षा भरी हुई है, जो बालक बालिकाओं के कोमल हृदय पर बड़ा प्रभाव डालेगी एवं उन को देश व जाति की सेवार्थ कटिबद्ध करेगी।

प्रकाशिका भोपाल आर्य्य कन्या विद्यालय की मुख्याध्यापिका है। उक्त विद्यालय मध्यभारत (Central India) के एक मुख्य नगर भोपाल में २२ वर्ष से कन्याओं को सुशिक्षा प्रदान कर रहा है।

इस विद्यालय के वर्त्तमान मुख्याधिष्ठाता श्रद्धेय विद्वद्वर्य्य श्री मास्टर कृष्णप्रसाद जी हैं, जो भोपाल हाईस्कूल के एक अनुभवी अध्यापक हैं तथा हिन्दी भाषा के बड़े ओजस्वी कवि हैं।

श्री अधिष्ठाता जी के अनुग्रह व प्रयत्न से विद्यालय

की उच्च श्रेणी की कन्याओं में काव्य-विषय का अच्छा बोध होता जाता है। हमारी साहित्य श्रेणी की एक होनहार कन्या मनोरमा देवी ने तो अपने कविता-प्रेम का ऐसा परिचय देना आरम्भ कर दिया है कि इस पुस्तक के कतिपय पद्य उस की ही कुशाग्र बुद्धि की उपज हैं।

लगभग २ वर्ष से इस रचना का कार्य्य बहुत धीमी२ चाल से चल रहा था, परन्तु जब मैंने लाहौर में होने वाली शताब्दी के अवसर पर इस पुस्तक को छपवाकर ले जाने एवं पुत्रीशालाओं आदि में इसको पाठ्य विषयों में प्रविष्ट कराने का विचार किया तो श्री पूज्य मास्टर जी ने शीघ्रातिशीघ्र इस को रचकर मेरी उत्कट अभिलाषा पूर्ण की। मैं मान्य मास्टर जी को उनकी इस विशेष कृपा पर अनेक धन्यवाद देती हूं।

प्रकाशिका तो इस सब सुधार व शिक्षा-प्रचार के लिये आर्य्य संसार के पूज्य, श्रद्धेय, गुरुवर, परिव्राजकाचार्य "महर्षि श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज" को धन्यवाद समर्पण किये बिना नहीं रह सकती जिन्होंने आर्य्य भाषा का उद्धार करके उसके पठन पाठन का पुनः प्रचार किया और विशेषकर स्त्री-जाति पर तो इस युग में यह उसी परोपकार-परायण आप्तपुरुष, बालब्रह्मचारी, दण्डी सन्यासी का महान उपकार है जो आज कन्या गुरुकुल, कन्या विद्यालय, पुत्री पाठशाला आदि २ के रूप में इतस्ततः दृष्टिगोचर हो रहा है। जो लोग २५ वर्ष पूर्व "स्त्रीशूद्रौनाधीयताम्" का पाठ एतद्देशीय भोले भाले

भाइयों को पढ़ाया करते थे वही आज मुक्त कण्ठ से सब को समान शिक्षा देने का अधिकारी ठहराते हैं।

मैंने जैसा पूर्व निवेदन किया है कि इस पुस्तक के वर्त्तमान रूप ग्रहण करने में हमारा कन्या विद्यालय ही निमित्त है और इसके पद्य शिक्षाप्रद तथा बाल बालाओं को उनके भावी जीवन-निर्माण में परम सहायक हैं। अतः इसी दृष्टि से मैंने इस को प्रकाशित कराने का निश्चय किया, और अब अपने निश्चय को कार्य्य रूप में परिणत करने का सुअवसर प्राप्त कर रही हूं।

उपयोगिता की दृष्टि से अभी इस में बहुत कार्य्य शेष है। यदि सामाजिक पाठशालाओं ने इस पुस्तक को अपनाया और इस में वृद्धि व सुधार के निमित्त प्रस्ताव भेजे तो उनका सहृदय आदर करते हुए अन्य संस्करण में अवश्य ध्यान रखा जायगा।

मेरा मन्तव्य इस लघु पुस्तक के प्रकाशित कराने का केवल यही है कि बालक बालिकाएँ खेल खेल में पुस्तकस्थ शिक्षापूर्ण पद्यों को पढ़ें, समझें और स्मरण करें। समय पाकर यही विद्याएं उनके जीवन को उच्च बनाने में सहायक होंगी।

अन्त में, मैं श्री मुख्याधिष्ठाता जी एवं समाज के मान्य सदस्यों को पुनः पुनः धन्यवाद देती हूं कि उन्होंने मेरे उत्साह को बढ़ाया और मेरे निश्चय को पूर्ण कराने में सर्वथा साहाय्य प्रदान किया।

निवेदिका—

महादेवी 'वानप्रस्थिनी'.

* ॐ *

समर्पण.

पूज्या महादेवी जी. मुख्याध्यापिका एक उच्च आर्य्यकुल की महिला हैं। काल-चक्र की गति ने इन को जब से वैधव्य दिया तब से यह पारिवारिक-जीवन को नीरस समझती रहीं। अन्ततोगत्वा सन् १९३३ में श्रीमद्दयानन्द-निर्वाण-अर्द्ध-शताब्दी के अवसर पर इन्होंने वानप्रस्थ-आश्रम ग्रहण किया। उस समय से यह विद्या-मन्दिर के एक छोटे से भाग में रहने लगीं और अपना जीवन इन्होंने परोपकार में लगा दिया। श्रीमती मित्रसभा, देवीजी के निर्वाह का विशेष ध्यान रखती है, क्योंकि परोपकारियों का जीवन बहुमूल्य हुआ करता है।

देवी जी की यह महती अभिलाषा थी कि मैं कोई ऐसी बालोपयोगी पुस्तक का प्रकाशन कराऊं जो भविष्य में उनका स्मारक चिह्न रहे। उनकी इस उत्कण्ठा को सादर दृष्टि से देखते हुए मैं यह बालोपयोगी "नीति-पुष्पाञ्जलिः" रचकर समर्पण करता हूं।

यदि मेरी यह तुच्छ भेंट देवी जी की अभिलाषा को किसी रूप में पूरा कर सकी तो मैं अपने को बहुत कृत-कार्य्य समझूंगा।

कृष्ण "दीन"

* ॐ *

" प्रार्थना-पञ्चक "

---*---

" तोटक "

(१)

जगदीश ! दया बदरी बरसै,
वर देहु पिता ! कविता सरसै ।
सब संकट विघ्न गणेश ! हरो ।
अभिलाष सदा मम पूर्ण करो ॥

" उपेन्द्रवज्रा "

(२)

महेश ! आनन्द विधान कीजे,
गणेश ! सारे हर दुःख लीजे ।
सुरेश ! आपत्ति सभी विनाशो,
दिनेश ! मेरे हिय को प्रकाशो ॥

" वंशस्थ "

(३)

कहाँ क्षमा दीनन पै प्रभो ! बड़ी ?
कहाँ हमारे अपराध की लड़ी ?
बड़े सदा छोटन पै करें दया,
नहीं हरे ! कोई यह विषय नया ॥

" पञ्च चामर "

(४)

करौ क्षमाऽपराध नाथ ! दुर्दशा निहारिये ।
पड़े विपत्ति सिन्धु माँहिं हे प्रभो ! उबारिये ॥
विलम्ब कीजिये न आप काज को सँवारिये ।
गिरे हुओं को हे पिता ! तुरन्त ही उधारिये ॥

" शिखरणी "

(५)

अहो न्यायाधीशा ! दुखित हिय, तेरो पग गहे ।
बिना तेरे स्वामी ! दिखत नहिं, कोई सुधिलहे ॥
दया के भण्डारा ! द्रवहु अब लाखों दुख सहे ।
खड़े तेरे द्वारे, विनय हम, सारे कर रहे ॥

कृष्ण "दीन"

विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं
तन्न आसुव ।

—※—

'स्वरावलिः'

अजर अमर अखिलेश को,
भजिये बारम्बार ।
होना चाहो "कृष्ण" जो,
भव सागर से पार ॥१॥

—※—

आम सबहिं प्यारो लगे,
सालै हिये बबूल ।
जिमि सुपूत लखि होय सुख,
कुसुत देखि है शूल ॥२॥

इच्छा ईश्वर मिलन की,
जो तेरे मन होय ।
कर निरोध चित वृत्ति को,
वृथा समय जनि खोय ॥३॥

———*———

ईख बड़ा तू तापसी,
कष्ट सहै पर हेत ।
जितनो तू दुख सहत है,
उतनो ही रस देत ॥४॥

———*———

उत्तम जन की पुष्प सम,
दो गति निश्चय आहिं ।
या तो मस्तक पै चढ़ै,
या सूखै वन माहिं ॥

ऊपर अमृत के वचन,
अन्तर विष भर पूर ।
कपटी जन से सर्वदा,
रहो "कृष्ण" अति दूर ॥६॥

—*—

ऋग्यजु साम अथर्व,
वेद चार प्रभु ने दिये ।
विनय पूर्ण तजि गर्व,
पढ़िये इन को सर्वदा ॥७॥

—*—

ऋ दैवी भाषा विषै,
स्वर केवल इक मान ।
याको अर्थ "गमन" अरू,
"करन चेष्टा" जान ॥८॥

लृट भविष्य का नाम है,
निज भविष्य करु शुद्ध ।
प्रेम परस्पर राखिये,
कबहुँ न कीजे युद्ध ॥९॥

—*—

लृ यद्यपि इक वर्ण है,
पै यह स्वयं समर्थ ।
माता, शिव, देवाङ्गना,
तीनों इहि के अर्थ ॥१०॥

—*—

एक चित्त हो ईश को,
प्रात साँझ कर ध्यान ।
त्रिविध ताप के नाश की,
यही औषधी जान ॥११॥

ऐक्य बराबर बल नहीं,
करो न तेहि को भंग ।
तृण समूह की जेवरी,
बाँधे मस्त मतंग ॥१२॥

—*—

आप न आवे हीर पै,
चढ़ै न जौलों सान ।
बिन विद्या माँजे कभी,
बुद्धि न पावे ज्ञान ॥१३॥

—*—

औषधि तन बूटी जड़ी,
मन औषधि हरिध्यान ।
जब यह दोनों स्वस्थ हों,
होय तभी कल्यान ॥१४॥

अंशुमालि के उदय तें,
होय तिमिर अवसान ।
तिमि विद्या के लाभ तें,
दूर होत अज्ञान ॥१५॥

—*—

अः अः वैदिक धर्म ही,
एक सनातन धर्म ।
अनुपम जेहि में रत्न हैं,
ज्ञान, उपासन, कर्म ॥१६॥

—•—

'व्यञ्जनावलिः'

कष्ट पराये देख के,
जिन के मन दुख होय ।
अस दयालु संसार में,
हैं अवश्य पर कोय ॥१७॥

खल सतपुरुषन संग तें,
निज शठता को खोय।
चन्दन विटप समीप बसि,
नीम सुगन्धित होय ॥१८॥

गहना कबहुँ न पहिनिये,
सुनो सीख दे कान।
चोर लोभ वश होय के,
करें अंग की हान ॥१९॥

घट घट वासी ईश को,
निज घट लेहु निहार।
औघट मत चल घट रहे,
आयु दिवस निस्सार ॥२०॥

ङ प्रयोग को लेहु निहारी।
जङ्गल, मङ्गल, शब्द मँझारी ॥
अरु गङ्गा पद के बिच देखो।
चतुरङ्गी दङ्गल में पेखो ॥२१॥

—*—

चञ्चल अति है मन बड़ो,
हठी और बलवान।
वश में करनो याहि को,
दुष्कर वायु समान ॥२२॥

—*—

छवि सुन्दर गुण हीन जन,
करै मान की आश।
चम्पा, जुही, गुलाब बिच,
पूछे कौन पलाश ॥२३॥

जल अरु अन्न तुल्य नहिं दाना।
मंत्र नहीं गायत्रि समाना॥
मातु पिता गुरु सम नहिं देवा।
कीजे तन, मन धन से सेवा॥२४॥

—*—

झट भोजन कर, चट चलो,
है शाला को देर।
पाठक निश्चय दंड दें,
पहुँचें बाल अबेर॥२५॥

—*—

ज्ञत्व मिलन खञ्जन में देखो।
प्रभु के चरण कञ्ज में पेखो॥
और निरञ्जन माहिं विचारो।
अञ्जन भक्ति लगाय निहारो॥२६॥

टट्टू घोड़ा, ऊँट, गज,
बैल, भेड़, अरु गाय ।
भारी सेवा नित करें,
केवल ही तृण खाय ॥२७॥

—*—

ठण्डी ठण्डी बहत बयारी ।
प्रात समय अति ही सुखकारी ॥
उषा काल हरि को भज लीजे ।
वायु शुद्ध नित सेवन कीजे ॥२८॥

—*—

डरै न दुर्जन सों कभी,
जाहि प्रेम अत्यन्त ।
मधुप गुलाब न त्यागहीं,
कण्टक यदपि अनन्त ॥२९॥

ढलती छाया देख के,
शिक्षा लेहु सुजान ।
रहै समय नहिं एक सो,
तजो वृथा अभिमान ॥३०॥

—*—

या त्रिपुण्ड के मध्य निहारो ।
खण्डन मण्डन माहिं विचारो ॥
अणु से अणु शिव सब सुखदायक ।
मह से मह ब्रह्माण्ड विनायक ॥३१॥

—*—

तन जल से, मन सत्य से,
बुद्धि ज्ञान से मान ।
विद्या, तप, से आत्मा,
रीति शुद्धि की जान ॥३२॥

थल, जल, तिल, गौ, वस्त्र, घृत,
कञ्चन, अन्न प्रदान।
इन सब से उत्तम महा,
केवल भिक्षा दान ॥३३॥

—*—

दया दृष्टि हम पै करो,
छमहु नाथ अपराध।
पतित उधारन जग पते !
गिरतों को लो साध ॥३४॥

—*—

धर्म, शीलता, ज्ञान, गुण,
विद्या, तप अरु दान।
जिन में ये कुछ भी नहीं,
ते नर पशू समान ॥३५॥

नर नारिन को चाहिये,
कौं सदा उपकार ।
धर्म्महीन जन को अहै,
मानव तन निस्सार ॥३६॥

पर सद्गुण को देखि निज,
अवगुण देहु निकार ।
सज्जन बनने की यही,
उत्तम रीति विचार ॥३७॥

फल क्या मानव देह से,
कियो न जो कछु धर्म्म ।
लोभ, मोह, भोजन, शयन,
पशुओं के भी कर्म्म ॥३८॥

बरस पाँचलों करहु दुलारा ।
पुनि दस लों ताड़न अधिकारा ॥
जब षोडश वय में सुत आवे ।
पितु तेहि मित्र तुल्य अपनावे ॥३९॥

भरत न कीन्हों राज,
बड़े भ्रात के सामने ।
अब ऐसी कहँ लाज,
लड़ें परस्पर रात दिन ॥४०॥

मन विचार आचरहु नित,
लखि पग धरहु सुजान ।
सत्य वचन बोलहु सदा,
पीवहु जल को छान ॥४१॥

यदि महिमा की चाह है,
तो निज को लघु मान ।
विनय पूर्ण तोहि को निरखि,
मानें पुरुष महान ॥४२॥

रहो बसो परदेश में,
सीखो कला अनेक ।
मातृ भूमि कर्त्तव्य का,
रखियो सदा विवेक ॥४३॥

लज्जा सम भूषण नहीं,
विद्या सम नहिं वित्त ।
मित्र तुल्य औषधि नहीं,
धारहु यह निज चित्त ॥४४॥

वचन बान को घाव हिय,
रहै सदा हरयाय ।
छुरी, तीर, तलवार को,
ब्रण निश्चय [illegible] जाय ॥२५॥

—*—

शरद, शिशिर, वर्षा अरु,
चौथी समझ बसन्त ।
ग्रीष्म पञ्चम जानिये,
छठवीं ऋतु हेमन्त ॥२६॥

—*—

षड़ वेदांग सुनाम,
शिक्षा, कल्प, व्याकरण ।
पढ़हु चहौ सुखधाम,
ज्योतिष, छन्द, निरुक्त सब ॥२७॥

सदा गुरुन के सामने,
करे विनय जो कोय।
यश, बल, विद्या, आयु में,
[illegible] की बढ़ती होय ॥४८॥

हरि कीजे हम पै दया,
दीजे अस वरदान।
देश, जाति, पितु, मात की,
सेवा करें महान ॥४९॥

क्षत्रिय कायर दोउन की,
अरि सम्मुख पहिचान।
एक भगै निज प्राण ले,
एक हटै ले प्रान ॥५०॥

त्रस्त, विकल, आरत महा,
प्यारा भारत देश ।
विद्या, बल अस दो प्रभो !
मेटें ताहि [illegible] ॥५१॥

——*——

ज्ञप्ति बाँटि बुलवाइये,
जनता उत्सव काल ।
भजन, वेद उपदेश से,
कीजे ताहि निहाल ॥५२॥

——•——

॥ शमित्योम् ॥

शब्दार्थ कोष.

(१) छन्द.

अजर- जो बूढ़ा न हो ।
अमर- जो मरै नहीं ।
अखिलेश- सब का स्वामी ।
भवसागर-संसार रूपी समुद्र ।

(२)

सालै- दुःख देवे ।
सुपूत- अच्छा पु । ।
कुसुत- बुरा पुत्र ।
शूल- कांटा, दुःख ।

(३)

निरोध- रोकना ।
चित्तवृत्ति- मन की इच्छाएँ ।
जनि- नहीं ।

(४)

तापसी- तप करनेवाला,
तपस्वी ।
पर हेत- दूसरों के लिये ।

(५)

पुष्प- फूल ।
गति- चाल, हालत ।
निश्चय-सन्देह रहित, यक़ीन ।
मस्तक- शिर ।

(६)

अन्तर- भीतर ।
कपटी- छली ।
सर्वदा- सदा, हमेशा ।

(७)

ऋग्यजु- ऋग्वेद, यजुर्वेद ।
विनयपूर्ण- बिन्ती से भराहुआ
गर्व- घमण्ड ।

(८)

दैवीभाषा- संस्कृत ।
विषै- में, अन्दर ।
करनचेष्टा- चेष्टा करना,
हिलना झुलना ।

(९)

भविष्य- आने वाला समय ।
परस्पर- आपस में ।
शुद्ध- साफ़, पवित्र, ।
युद्ध- लड़ाई, झगड़ा ।

(१०)

यद्यपि-जो भी, अगर्चे ।
वर्ण- अक्षर ।
स्वयं- अपने आप, खुद ।
समर्थ- अर्थवान्, बलवान् ।
देवाङ्गना- देवता की स्त्री, देवी

(११)

त्रिविध ताप-तीन ताप अर्थात्
आत्मिक, शारी-
रिक, मानसिक ।
औषधी-दवा ।

(१२)

ऐक्य-मेल, एकता ।
भंग- तोड़ना ।
तृण- घास, तिनका ।

समूह- झुण्ड ।
मस्त- मतवाला ।
मतंग- हाथी ।

(१३)

ओप- चमक ।
हीर- हीरा ।
सान- धार व चमक लाने का यंत्र ।

(१४)

स्वस्थ- ठीक, दुरुस्त ।
कल्यान- सुख ।

(१५)

अंशुमाली- सूरज ।
तिमिर- अन्धकार ।
अवसान- अन्त ।
तिमि- तैसे ।
अज्ञान- अविद्या, मूर्खता ।

(१६)

सनातन- सदा ।
अनुपम- उपमारहित, बेमिसाल ।
उपासन- उपासना, ईश्वर का ध्यान ।

(१७)

कष्ट- दुःख ।
दयालु- कृपालु ।

(१८)

खल- दुष्ट ।
सत्पुरुष- सज्जन ।
शठता- दुष्टता ।
विटप- वृक्ष ।
सुगन्धित- खुशबूदार ।

(१९)

सीख- शिक्षा, नसीहत ।
लोभवश- लालच में पड़कर ।

(२०)

घन- [illegible] ४७) व्यापक ईश्वर ।
घट- हृदय ।
लेहु निहार- देखलो ।
औघट- कुमार्ग ।
आयु दिवस- उम्र के दिन ।
निस्सार- बेकार ।

(२१)

प्रयोग- काम में लाना, इस्तैमाल ।
चतुरंगी दंगल- चार प्रकार की सेना का युद्ध ।
पेखो- देखो ।

(२२)

चञ्चल- चपल ।
दुष्कर- कठिन ।

(२३)

छबि- चहरा, नाक नकशा ।
गुणहीन- मूर्ख ।
मान- आदर ।
आश- आशा, उम्मीद ।

(२४)

तुल्य- समान, बराबर ।

गायत्री- गुरुमन्त्र ।

(२५)

पाठक- अध्यापक ।
दंड- सज़ा ।
अ[illegible]र- देर ।

(२६)

खञ्जन- एक पक्षी का नाम ।
चरण कञ्ज- पद क[illegible]
निरञ्जन-नि[illegible] ।
अञ्जन- सुरमा, [illegible]जल ।

(२७)

गज- हाथी ।
सेवा- ख़िदमत ।

(२८)

बयारी- वायु, हवा ।
सुखकारी-आनन्द देनेवाली ।
उषाकाल-पौ फटने का समय ।

(२९)

दुर्जन- दुष्ट ।
अत्यन्त- बेहद ।
मधुप- भौंरा ।
कण्टक- काँटा ।
अनन्त- बेशुमार, अगणित ।

(३०)

शिक्षा- उपदेश, नसीहत ।
सुजान- सज्जन ।
वृथा- बेकार, निस्सार ।
अभिमान- घमण्ड ।

(३१)

त्रिपुण्ड-तीन लकीरों का तिलक
खण्डन- तोड़ना ।
मण्डन- बनाना, ठीक करना ।
अणु- सब से छोटा टुकड़ा ।
मह- महान्, बड़ा ।
शिव- कल्याण करने वाला,
सुखदायक ।
ब्रह्माण्ड- संसार ।
विनायक- स्वामी, नेता ।

(३२)

ज्ञान- विद्या ।
मान- मानले, समझले ।
रीति- विधि, ढंग, तरीक़ा ।

(३३)

कञ्चन- सुवर्ण, सोना ।
प्रदान- देना ।
उत्तम- श्रेष्ठ ।

(३४)

दयादृष्टि- कृपा की निगाह ।
छमहु- क्षमा करो ।
अपराध- दोष, क़ुसूर ।
पतितउधारन- गिरे हुओं को
उठाने वाले ।
जगपते- हे संसार के स्वामी ।
लो साध-साधलो, संभाल लो ।

(३५)

शीलता- अच्छा स्वभाव ।
पशु- चौपाया, ढोर ।

(३६)

उपकार- भलाई ।
मानवतन-मनुष्य देह मानव देह
धर्म्म हीन- अधर्म्मी, वेईमान ।

(३७)

पर सद्गुण-दूसरों की अच्छाई

अवगुण- बुराई।
निज- अपनी।

(३८)

मोह- अज्ञान।
शयन- निद्रा, सोना।

(३९)

दुलारा- प्यारा, प्यार।
पुनि- फिर।
ताड़न- दण्ड।
अधिकार- इख़्त्यार, हक़।
षोडस वय- १६ वर्ष की आयु।

(४०)

भ्रात- भाई।
राज- राज्य, हुकूमत।

(४१)

नित- नित्य, सदा।
आचरहु- आचरण करो।
लखि- देखकर।
पथ- मार्ग, रास्ता।

(४२)

महिमा- बड़ाई।
लघु- छोटा।
निरखि- देखकर।

(४३)

कला- हुनर।
अनेक- बहुत।
मातृ-भूमि- जन्म-भूमि।
कर्त्तव्य- धर्म्म।
विवेक- ज्ञान, विचार।

(४४)

भूषण- गहना, ज़ेवर।
वित्त- धन।

(४५)

बान- तीर।
घाव- ज़ख़्म।
हिय- हृदय, दिल।
व्रण- ज़ख़्म, घाव।

(४६)

ऋतु- मौसम।

(४७)

षड्- छै, ६।
वेदाङ्ग- वेदों के अंग, शास्त्र।
सुखधाम- सुख का स्थान।

(४८)

यश- कीर्त्ति।

(४९)

वरदान- उत्तम दान।

(५०)

क्षत्रिय- वीर, बहादुर।
कायर- डरपोक।
अरि- वैरी, शत्रु।
सम्मुख- सामने।

(५१)

त्रस्त- दुखित।
विकल- व्याकुल, बेचैन।
कलेश- दुःख, सन्ताप।

(५२)

ज्ञप्ति-विज्ञप्ति, नोटिस इश्तहार
जनता- सब लोग।
उत्सव- जलसा।
निहाल- अति प्रसन्न।

——*——

भोजन समय ईश-वन्दना ।

(छन्द भुजंगप्रयात)

नमो विश्व भर्त्ता ! नमो हे विधाता !
तिहारे दिए अन्न खाता हुँ दाता ॥
सुनी आर्त्त [illegible] यदा कर्त्तृ तूने ।
[illegible]ए अन्नादि हे भर्त्तृ ! तूने ॥
सुधा नीर-हे नाथ ! तूने दिया है ।
अरू दूध घी से समर्थी किया है ॥
रखे हैं सुपकान्न जो यों अनेका ।
क्षुधा हैं बुझाते बढ़ाते विवेका ॥
बनूं पुष्ट अंगो करूं देश सेवा ।
मरूं देश के हेत हे मोक्ष देवा ! ॥
सदा सत्य विद्या पढ़ूं औ पढ़ाऊँ ।
स्वयं सत्य मार्गी बनूं औ बनाऊं ॥
मुझे ऐसी दो ईश ! मस्तिष्क शक्ती ।
कि हो वेद जिव्हाग्र हो तेरी भक्ती ॥
बनूं सर्व के चित्त में हे अनन्ता !
न हो कोई वैरी अहो शत्रुहन्ता ! ॥
करो प्रार्थना "कृष्ण" औ भोज खावो ।
प्रभू के पदाम्बोज में शीश नावो ॥
बड़ी शान्ति से खान औ पान कीजै ।
अरू अन्त में धन्य भर्त्तार दीजै ॥
यदा भोज शाला में प्रावेश होवे ।
इसी वन्दना का सदा पाठ होवे ॥
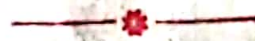
गीतिका (१)

स्नान करने से बहिनो ! सब तन की शुद्धी होती है।
अरु सन्ध्या वन्दन करने से मन निर्मल शुद्धी होती है॥

जिसने शारीरिक शुद्धी की नहिं उ[illegible]ग सताता है।
जो शुद्ध आत्मा होता है वह अनुपम सुख को पाता है॥

उच्च शिखर पर गौरव गिरि के हम क्रम से चढ़ जावेंगी।
अखिल विश्व के इतिहासों में अपना नाम लिखावेंगी॥

विद्या की खानों के भीतर हो निर्भय जाना चाहिये।
और वहाँ से विद्या रूपी रत्न राशि लाना चाहिये॥

वैदिक धर्म प्राप्त कर हम फिर धर्म्म की धूम मचावेंगी।
दश रत्नों का हार पहिन कर मेंहदी शील रचावेंगी॥

निज कर्त्तव्य कर्म के पथ पर यदि हम चलती जावेंगी।
तो इक दिन सीता सावित्री सी देवी बन जावेंगी॥

बहिनो ! हमको धर्म्म कर्म्म पर दृढ़ता से रहना चाहिये।
चाहे जितने संकट आएँ हँस हँस के सहना चाहिये॥

गीतिका (२)

यह विनय हम बालिकाओं की प्रभो ! सुन लीजिये ।
बुद्धि, विद्या का हमें भगवन ! अतुल बल दीजिये ॥
ज्ञान रूपी सूर्य [illegible] कीजे हृदय में अब प्रकाश ।
मोह औ अज्ञान का सारा तिमिर हर लीजिये ॥
धर्म्म के उद्यान में निर्भय हमारा हो विहार ।
एकता और संगठन की पूर्ण शक्ती दीजिये ॥
दृढ़ रहैं कर्त्तव्य पै ऐसा हो बल हम को प्रदान ।
देश सेवा के लिये कटिबद्ध हम को कीजिये ॥
गार्गी लीलावती सी पण्डिता बन जायँ हम ।
ज्ञान के भण्डार ! ऐसा ज्ञान हम को दीजिये ॥
धैर्य्य, साहस से सदा बहिनो ! करो अपना सुधार ।
विघ्न बाधाओं से डर कर पग न पीछे दीजिये ॥

दोहा ।

प्यारे भारत वर्ष का, प्रभो करो उत्थान ।
इन्द्रा, शान्ति, मनोरमा, करें विनय भगवान ॥

——*——

गीतिका (३)

अब तो बहिनो! हम को कुछ करके दिखाना चाहिये।
देश की नैया किनारे पर लगाना चाहिये॥
फँस गया है देश भारत हा! अ[illegible] जाल में।
करके तुमको यत्न कुछ उसको छुड़ाना चाहिये॥
जाग उठो प्यारी सखियो! अब [illegible]त तुम सो चुकीं।
मातृ भूमि की तुम्हें लज्जा बचाना चाहिये॥
हो अगर यह लालसा अनुसूया सी देवी बनें।
तो हमें विद्या में अपनी रुचि बढ़ाना चाहिये॥
प्यारे भारत वर्ष की गिरती दशा को देख कर।
हमको तन, मन, धन से बस उसको बढ़ाना चाहिये॥

सोरठा।

विन्ती करें महेश, विमला, कौशल्या, हरी।
काटो सकल कलेश, भारत आरत है रहो॥

———*———